कुछ बातें पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया के विषय में

इन दिनों मैंने पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया और उसकी राजनीतिक शाखा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया के नेताओं के वीडियो देखें और कुछ बाते नोट की जिनको मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

1. एक वीडियो में एक बैनर नज़र आता है जिसमे एक नोजवान हाथ मे छुरी लिये भीड़ का मुकाबला कर रहा है। इस घटना को पीएफआई के नेता डॉ तस्लीम रहमानी कुछ इस तरह बयान करते है कि एक मुस्लिम नोजवान को भीड़ ने लींचिंग के लिये घेर लिया तब उस नौजवान ने तीन लोगों को छुरी से क़त्ल कर दिया और 500 की भीड़ उससे डरकर भाग गई। डॉ तस्लीम रहमानी का यह भाषण आम मुस्लिम को बहुत अच्छा लगता है और इसपर काफी तालिया बजती है लेकिन अगर आप इसमे छिपे संदेश पर गौर करेंगे तो यह युवाओं को हिंसा के लिये प्रेरित करने का काम करता है और अगर एक बार मुस्लिम युवाओं ने डॉ तस्लीम रहमानी के संदेश पर इस दिशा में पहल कदमी कर दी तो जैसा हिंसा का चक्र 1989 के बाद कश्मीर में शुरू हुआ था कर्नाटक या जहां भी पॉपुलर फ्रंट का प्रभाव है वहां शुरू हो जाएगा। मेरी नज़र में इस तरह हिंसा का महिमामंडन करने वाले वीडियो मुसलमानों खासतौर पर मुस्लिम नोजवानो को गलत दिशा में डाल देंगे। हमे इस तरह की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना होगा।

2. अपने भाषण में डॉ तस्लीम रहमानी कह रहे है कि लोग कहते है कि इस्लाम तलवार के बल पर फैला तो चलो हम उनकी बात को मान लेते है कि तलवार के बल पर फैला तो तब हमारी तलवार में इतना दम था और तुम्हारी तलवार में दम नही था। इस बात से भी वो बहुसंख्यक समाज को चिड़ा रहे है और उनको अपनी हिंसा को जायज़ ठहराने के मौक़ा उपलब्ध करा रहे है। वो कह सकते है कि तब तुम्हारी तलवार में दम था तो आज हमारी तलवार में दम है यानी कोई भी फैसला लोकतांत्रिक तरीके अपनाकर नही तलवार के बल पर होना है। इस तरह के नज़रिये को भी हतोत्साहित किया जाना चाहिये।

3. डॉ तस्लीम रहमानी अपने भाषण में मुसलमानों की तुलना भेड़ों से करते हुए कहते है कि जो भेड़ें अपने रेवड़ से बाहर भागती है यानी उनका कहने का आशय है कि जो मुसलमान दूसरी पार्टियों में चले जाते है उनपर साम्प्रदायिक कुत्ते भोंककर हमला करते है और तब वो फिर से अपने रेवड़ में शामिल हो जाती हैं यानी मुसलमान दूसरी पार्टियों को वोट देने की जगह उनकी पार्टी को वोट दें तभी वो महफूज़ रह पाएंगे। इसमे भी यही संदेश है कि मुसलमान भेड़ों की तरह अपने रेवड़ में रहे यानी लोकतंत्र में जो राजनीतिक पसंद की आज़ादी होती है उसे छोड़कर उनके पास आ जाएं।

4. डॉ तस्लीम रहमानी आरएसएस की एक और स्थापना पर मोहर लगाते हुए कहते है कि 800 साल भारत मे मुसलमानों का शासन रहा मगर मुसलमानों की आबादी कम है यानी वो चाहते तो ज़्यादातर लोग मुसलमान हो सकते थे। यहां वो 800 साल शासन को मुसलमानों का शासन कह रहे है जबकि हुकूमत चंद खानदानों ने की थी जिनका मज़हब ज़रूर इस्लाम था लेकिन आम मुसलमानों से उनका वही ताल्लुक़ था जो एक बादशाह का अपनी रियाया से होता है। उन बादशाहो द्वारा जो भी अच्छा-बुरा किया गया उसकी जिम्मेदारी अवाम पर नही डाली जा सकती जैसे आजके हिन्दू शासकों के जनता के खिलाफ किये जा रहे कामो की ज़िम्मेदारी हिन्दू जनता पर नही डाली जा सकती।

5. डॉ तस्लीम रहमानी बीजेपी नेतृत्व पर व्यक्तिगत यानी उनके पारिवारिक जीवन पर हमला करके तालियां बटोरते है। उनका यह काम मुसलमानों को कोई लाभ नही पहुंचाता बल्कि उनका यह काम वैसा ही है जैसा धीरेंद्र अस्थाना के उपन्यास समय एक शब्द भर नही में एक आफिस का चित्रण किया गया है जहाँ के क्लर्क अपने बॉस की डांट कहते हुये उसका विरोध तो नही कर पाते बल्कि अपने गुस्से का इज़हार वाशरूम में करते है जहाँ उन्होंने दीवार पर अपने बॉस की तस्वीर बना रखी है और सभी उसपर पेशाब करते हैं। तो डॉ तस्लीम रहमानी बीजेपी नेतृत्व पर व्यक्गिगत हमले करके लोगो के गुस्से को इस तरह बाहर निकालने की कोशिश करते हैं। किसी भी स्तरीय राजनीतिक पार्टी नेतृत्व को इस तरह के व्यक्तिगत हमलों से बचना चाहिये क्योंकि इस तरह के आचरण से मुसलमानों को कोई लाभ नही पहुंचता है। कुल मिलाकर पीएफआई या उसकी राजनीतिक शाखा एसडीपीआई मुसलमानों को गलत दिशा की ओर ले जा रही है जिसकी परिणीति हिंसक आंदोलन में होगी हमे लोगों को इससे सावधान करना होगा।